VACHASPTI DR. V. R. PANCHAMUKHI

Dr. V. R. Panchamukhi is a distinguished scholar with expertise in both Economics and Sanskrit.

2. Born on 17th September, 1936, in Bagalkot, Karnataka, Dr. Panchamukhi excelled academically, earning his B.A. in Mathematics and Statistics from Karnataka University, Dharwad and M.A. in Mathematical Statistics with Econometrics from Bombay University in 1956. His Ph.D. in Economics from Delhi School of Economics (1963) on "Application of Game Theory to International Trade and Investment" was highly acclaimed by international scholars. His pioneering work on Game Theory, Effective Rate of Protection, and Domestic Resource Cost has been widely recognized as pathbreaking contributions. He held esteemed positions such as Chancellor of Rashtriya Sanskrit University, Tirupati (10 years), Founder Director General of Research and Information System for Developing Countries, Ministry of External Affairs (18years), and Chairman of the Indian Council of Social Science Research, Ministry of Human Resources(ICSSR) (3 yeais). He also served as a professor at Bombay University (15 years) and Delhi University (5 years).He currently serves as Chancellor of Sri Gurusarvabhouma Sanskrit Vidyapeeth, Sri Raghavendra Swamy Mutt, Mantralayam, and President of The Indian Econometric Society's Trust (TIES Trust).

3. Dr. Panchamukhi contributed significantly to economic policy, serving as Member Secretary of the PC. Alexander Committee on Import-Export Policies, which laid the groundwork for trade liberalization in 1977-78.While working in UN ECAFE, Bangkok, his collaboration with Nobel Laureate Jan Tinbergen on 'Development Models and Resource Gaps for ESCAP countries', in 1970, influenced global resource transfers. His work at South Centre, Geneva, played a key role in the rejection of the Multilateral Agreement on Investment (MAI) at the NAM Summit in Singapore. He has delivered impactful lectures worldwide, including 'Theme of Strategy for Least Developed Countries' at a special session at ESCAP in Shanghai and the prestigious Bob Hawke Lecture in Adelaide, Australia. His roles at UNESCAP, UNIDO, UNCTAD, UNDP, ILO, World Bank, IMF, and other multilateral bodies highlight his influence in global economic policymaking. Under his leadership, the SAARC Trade, Manufactured, and Services (TMS) Study became the foundation for inclusion of TMS in the framework of economic cooperation in the SAARC region.

4. Dr. Panchamukhi has authored several influential books, including Trade Policy in India: A Quantitative Analysis and Planning, Development, and the World Economic Order displaying deep insight in various aspects of Economics. He also explored India's classical economic thought in Indian Classical Thoughts on Economic Development and Management. As President of the Indian Economic Association and The Indian Econometric Society (TIES) (1998-2000), he significantly advanced economic research. He was the Managing Trustee of the TEA Trust for Research and Development (1987-2005) with Dr. Manmohan Singh as its Chairman. With his exceptional academic acumen, he played a crucial role as the Convener of the World Economic Congress (1986). He was the joint editor of the volume on “Agriculture and Industry”. As a member of the National Statistical Commission, he contributed to making far-reaching recommendations, strengthening India's statistical systems. He served on the boards of the Industrial Finance Corporation of India (IFCI) and Indian Overseas Bank for several years. As the Managing Editor of the Indian Economic Journal, he raised the stature and quality of the journal to international standards. His recent work - a magnum opus, an English translation (1050+ pages) of Kannada Grantha 'Kaliyugakalpataru' by Sri Raja S. Gururajacharya, received extolling forewords from Hon'ble Prime Minister Narendra Modi, and others.

5. Dr. Panchamukhi is also an accomplished scholar of Sanskrit and Indology. He has delivered lectures in Sanskrit on contemporary issues and authored books such as Economic Survey of India and Contemporary Economic Issues and Challenges in Sanskrit. He was honored with the President's Certificate of Honour in Sanskrit (2003) and titles like Vachaspati by Lai Bahadur Shastri Sanskrit University and Visishta Sanskrit Seva Vrati by Rashtriya Sanskrit Sansthan University at the world Sanskrit conference. He was President of Akhila Bharata Madhva Maha Mandal, where he delivered a unique lecture on "Madhva's Philosophy of Life and Social Welfare.

6. Numerous cultural and spiritual institutions have recognized the contributions of Dr. Panchmukhi. Sri Raghavendra Swamy Mutt awarded him the Sri Raghavendra Anugraha Prasasti, while Sri Vyasaraya Mutt honored him with Vyasara Janugraha Prasasti. He has also received accolades such as Vidwat Chakravarti, Viswa Vidya Kulapati, Vidya Ratnam and Madhva Shiromani.

वाचस्पति डॉ. वा. रा. पंचमुखी

डॉ. वा. रा. पंचमुखी एक प्रसिद्ध विद्वान हैं जो अर्थशास्त्र और संस्कृत दोनों में विशेषज्ञता रखते हैं।

2. 17 सितंबर, 1936 को कर्नाटक के बगलकोट में जन्मे, डॉ. पंचमुखी ने शैक्षणिक रूप से उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। उन्होंने कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़ से गणित और सांख्यिकी में बी.ए. तथा 1956 में बॉम्बे विश्वविद्यालय से अर्थमिति के साथ गणितीय सांख्यिकी में एम.ए. किया। दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से "एप्लीकेशन ऑफ गेम थ्योरी टू इंटरनेशनल ट्रेड एंड इंवेस्टमेंट" पर अर्थशास्त्र में उनकी पी.एच.डी. (1963) को अंतरराष्ट्रीय विद्वानों द्वारा काफी प्रशंसा की गई। गेम थ्योरी, प्रभावी संरक्षण दर और घरेलू संसाधन लागत पर उनके अग्रणी कार्य को अपूर्वयोगदान के रूप में व्यापक पहचान मिली है। उन्होंने राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति के कुलपति (10 वर्ष), विदेश मंत्रालय में विकासशील देशों के लिए अनुसंधान और सूचना प्रणाली के संस्थापक महानिदेशक (18 वर्ष) और मानव संसाधन मंत्रालय (आई.सी.एस.एस.आर.) के भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद के अध्यक्ष (3 वर्ष) जैसे प्रतिष्ठित पदों पर कार्य किया। उन्होंने बॉम्बे विश्वविद्यालय (15 वर्ष) और दिल्ली विश्वविद्यालय (5 वर्ष) में प्रोफेसर के रूप में भी अपनी सेवाएं दीं। वर्तमान में वह श्री गुरुसार्वभौम संस्कृत विद्यापीठ, श्री राघवेंद्र स्वामी मठ, मंत्रालयम के कुलाधिपति और भारतीय अर्थमिति सोसायटी ट्रस्ट (टाइस ट्रस्ट) के अध्यक्ष के रूप में कार्यरत हैं।

3. डॉ. पंचमुखी ने आयात–निर्यात नीतियों पर पीसी अलेक्जेंडर समिति के सदस्य सचिव के रूप में कार्य करते हुए आर्थिक नीति में महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिसने 1977–78 में व्यापार उदारीकरण की नींव रखी। बैंकॉक में यूएन ईसीएएफई में काम करते हुए, 1970 में 'डेवलपमेंट मॉडल्स एंड रिसोर्स गैप्स फॉर एस्कैप (ईएससीएपी) कंट्रीज' पर नोबेल पुरस्कार विजेता जान टिनबर्गेन के साथ उनके सहयोग ने वैश्विक संसाधन हस्तांतरण को प्रभावित किया। जिनेवा के साउथ सेंटर में उनके काम ने सिंगापुर में नाम शिखर सम्मेलन में निवेश पर बहुपक्षीय समझौते (एमएआई) को अस्वीकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने शंघाई में आयोजित एस्कैप के एक विशेष सत्र में 'थीम ऑफ स्ट्रेटजी फॉर लीस्ट डेवलप्ड कंट्रीज' और ऑस्ट्रेलिया के एडिलेड में प्रतिष्ठित बॉब हॉक व्याख्यान सहित दुनिया भर में प्रभावशाली व्याख्यान दिए हैं। यूएनईएससीएपी, यूएनआईडीओ, यूएनसीटीएडी, यूएनडीपी, आईएलओ, विश्व बैंक, आईएमएफ और अन्य बहुपक्षीय निकायों में उनकी भूमिकाएं वैश्विक आर्थिक नीति निर्माण में उनके प्रभाव को उजागर करती हैं। उनके नेतृत्व में, सार्क व्यापार, विनिर्माण और सेवा (टीएमएस) अध्ययन, सार्क क्षेत्र में आर्थिक सहयोग के ढांचे में टीएमएस को शामिल करने का आधार बना।

4. डॉ. पंचमुखी ने कई प्रभावशाली पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें ट्रेड पॉलिसी इन इंडियाः ए क्वांटिटेटिव एनालिसिस एंडप्लानिंग, डेवलपमेंट, एंड द वर्ल्ड इकोनॉमिक ऑर्डर शामिल हैं, जो अर्थशास्त्र के विभिन्न पहलुओं में गहरी अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं। उन्होंने आर्थिक विकास और प्रबंधन पर भारतीय पारंपरिक विचारों में भारत के पारंपरिक आर्थिक विचारों की भी खोज की। भारतीय आर्थिक संघ और भारतीय अर्थमिति सोसायटी (टाइस) के अध्यक्ष (1998–2000) के रूप में, उन्होंने आर्थिक शोध को महत्वपूर्ण रूप से आगे बढ़ाया। वह टीईए ट्रस्ट फॉर रिसर्च एंड डेवलपमेंट (1987–2005) के मैनेजिंग ट्रस्टी थे, जिसके अध्यक्ष डॉ. मनमोहन सिंह थे। अपनी असाधारण शैक्षणिक कौशल के साथ, उन्होंने विश्व आर्थिक कांग्रेस (1986) के संयोजक के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वह "कृषि और उद्योग" खंड के संयुक्त संपादक थे। राष्ट्रीय सांख्यिकी आयोग के सदस्य के रूप में, उन्होंने भारत की सांख्यिकीय प्रणालियों को मजबूत करते हुए दूरगामी सिफारिशें करने में योगदान दिया। उन्होंने कई वर्षों तक भारतीय औद्योगिक वित्त निगम (आईएफसीआई) और इंडियन ओवरसीज बैंक के बोर्ड में काम किया। इंडियन इकनोमिक जर्नल के प्रबंध संपादक के रूप में, उन्होंने जर्नल की प्रतिष्ठा और गुणवत्ता को अंतरराष्ट्रीय मानकों तक पहुंचाया। उनकी महान नवीनतम कृति, श्री राजा एस गुरुराजाचार्य द्वारा लिखित कन्नड़ ग्रंथ 'कलियुगकल्पतरु' के अंग्रेजी अनुवाद (1050+ पृष्ठ) को माननीय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी और अन्य लोगों की प्रशंसा मिली।

5. डॉ. पंचमुखी संस्कृत और इंडोलॉजी के भी एक परिपूर्ण विद्वान हैं। उन्होंने समकालीन मुद्दों पर संस्कृत में व्याख्यान दिए हैं और भारत का आर्थिक सर्वेक्षण तथा संस्कृत में समकालीन आर्थिक मुद्दे और चुनौतियां जैसी पुस्तकें लिखी हैं। उन्हें संस्कृत में राष्ट्रपति के सर्टिफिकेट ऑफ ऑनर (2003) से सम्मानित किया गया तथाविश्व संस्कृत सम्मेलन में लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा वाचस्पति और राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान विश्वविद्यालय द्वारा विशिष्ट संस्कृत सेवा व्रती जैसी उपाधियाँ दी गईं। वह अखिल भारतीय माधव महामंडल के अध्यक्ष थे, जहाँ उन्होंने "माधव के जीवन दर्शन और सामाजिक कल्याण" पर एक अनूठा व्याख्यान दिया।

6. अनेक सांस्कृतिक और आध्यात्मिक संस्थाओं ने डॉ. पंचमुखी के योगदान को मान्यता दी है। श्री राघवेन्द्र स्वामी मठ ने उन्हें श्री राघवेन्द्र अनुग्रह प्रशस्ति से सम्मानित किया, जबकि श्री व्यासराय मठ ने उन्हें व्यासार्जनुग्रह प्रशस्ति से नवाजा।उन्हें विद्वत चक्रवर्ती, विश्व विद्या कुलपति, विद्या रत्नम और माधव शिरोमणि जैसी उपाधियां भी मिली हैं।